श्री महावीर कथा

साध्वी युगल
निधि-कृपा

असंयम की बहुलता में
संयम को पुनर्जीवित करनेवाली
27 जन्मों की प्रवचनात्मक
संपूर्ण जीवन संगाथा

श्री महावीर कथा

प्रस्तुति

साध्वी युगल निधि-कृपा

MAITRI CHARITABLE FOUNDATION
Website : www.sadhviyugal.com
E-mail : info@sadhviyugal.com
sadhviyugal@gmail.com

अनुक्रम

❋	भगवान महावीर : एक रोल मॉडल	vii
❋	महावीरमय बनो	ix
❋	प्रतियोगिता का बिगुल	xi
❋	श्री महावीर कथा क्यों पढ़ें?	xiii
❋	श्री महावीर कथा का महाप्रसाद	xiv
1.	जीवन के शिल्पी बनो	1
2.	सत्य की पहली किरण	15
3.	नहीं ऐसो जन्म बार-बार	27
4.	सबके सुख में मेरा सुख	41
5.	मद नहीं मदद करो	59
6.	प्रभु का जन्म हृदय में हो	73
7.	वर्धमान से महावीर	97
8.	प्रभु चले निज घर	13
9.	तुम स्वयं जिम्मेदार हो	137
10.	दु:खों का स्वीकार कर्मों का परिहार	155
11.	क्षमा के महासागर में केवलज्ञान का मोती	179
12.	अर्हत् यात्रा से निर्वाण तक	198
❋	सीपियाँ नहीं मोती उठाओ	225

भगवान महावीर : एक रोल मॉडल

भगवान महावीर के दिव्य जीवन का कालजयी प्रभाव एवं परिचय देनेवाली 'श्री महावीर कथा' सभी के लिए ग्राह्य है। इसमें श्रुतप्रेमी साध्वी युगल निधि-कृपा श्री जी ने प्रवचनों के माध्यम से प्रभु महावीर के चिन्तन, दर्शन और अध्यात्म को एक नव्य दृष्टि दी है। इतना ही नहीं धर्म के धरातल पर खड़े होकर मनुष्य की स्वाधीनता एवं समानता के प्रति अविकल्प निष्ठा भी प्रदान की है। इससे आज की पीढ़ी समझ पायेगी कि भगवान महावीर की जय क्यों बुलाई जाती है।

एक बात पूर्णत: प्रकट है कि आज मानवता खतरे में है। चूँकि वह ऐश्वर्यपरक सामग्रियों के तले दबी कराह रही है। विकास के नाम पर विध्वंसक अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण ने इन्सान को धर्म और अध्यात्म से बहुत दूर कर दिया है।

ऐसी स्थिति में मनुष्य आत्मक्षेत्र में अपना साम्राज्य कैसे संस्थापित कर सकता है, इस तथ्य को साध्वी युगल ने सिद्धान्त और प्रसंगों से तराशकर 'श्री महावीर कथा' के रूप में प्रस्तुत किया है।

आज की चिन्तनप्रिय युवा पीढ़ी बिल गेट्स, रतन टाटा, कल्पना कार्तिक, धीरू भाई अम्बानी, अमिताभ बच्चन और शाहरूख खान जैसी हस्तियों को अपना रोल मॉडल बना रही है। उनके अभिभावक भी उन्हें उसी दिशा में प्रोत्साहित कर रहे हैं किन्तु उन्हें यह ख्याल क्यों नही आता कि यदि हम भगवान महावीर को रोल मॉडल बनाते हैं तो उनका सर्वांगीण विकास होगा। उन्हें सुविधा के साथ सुख चैन, ऐश्वर्य के साथ शान्ति और कर्म-भुक्ति के साथ कर्म-मुक्ति की कला भी मिलेगी।

प्रस्तुत बारह प्रवचनों में पूज्या साध्वी युगल ने भगवान महावीर के समग्र जीवन दर्शन को हृदय में उंडेलने का सम्यक् प्रयास किया है।

इससे सिद्ध है कि साध्वी युगल क्षमतावान से भी अधिक प्रातिभ हैं क्योंकि क्षमता केवल वह करती है जो वह कर सकती है परन्तु प्रतिभा वह कर दिखाती है जो किया ही जाना चाहिए।

प्रभु महावीर हम सब के लिए ऐसा रोल मॉडल बने जो जीवन को वैराग्य, समता और क्षमा के शीतल फुहारों के छीटों से अभिसिंचित कर दे। ऐसी सदिच्छा के साथ साध्वी युगल के चरणों में इस अकृत्रिम श्रुत उपकारार्थ कृतज्ञतापूर्वक वंदन-अभिनंदन ...।

मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन
मृदु-प्रदीप जैन
दिल्ली

विशेष

ज्ञातव्य है कि सचित्र श्री महावीर कथा की DVD देखने के पश्चात् लोगों की डिमांड पर इसका शब्दांकन करने का सुअवसर **मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन** को मिला।

हर्ष की बात यह है कि DVD एवं प्रस्तुत पुस्तक सन् 2010 में आयोजित अखिल भारतीय ज्ञान प्रतियोगिता का आधार बनी।

स्मरण रहे, साध्वी युगल निधि-कृपा श्री की प्रवचनात्मक साहित्य सृजना का यह प्रथम पुष्प है।

महावीरमय बनो

जीवनी शक्ति का उपयोग दो प्रकार से हो सकता है, धधकते अंगारे की तरह और भस्माच्छन्न अंगारें की मानिंद। मनुष्य अपने जीवन को तपोवन भी बना सकता है और नरक का महारौरव बिल भी बन सकता है। मनुष्य हारता है तो खुद से ही हारता है। उसकी तृष्णा, उसका क्रोध, उसका वैर उसे पछाड़ रहा है इसलिए वह अपनी ही हिंसा की ज्वाला में भस्म हो रहा है।

आज मनुष्य बाहरी क्षेत्र में इतना पराक्रमी बना है कि नभ, जल और थल को नापने लगा है। उसके एक एक संकेत पर महायुद्ध भड़क सकते हैं। चाहे कितने ही ठाठ से आज मनुष्य राज्य, प्रभुता, कारोबार, संप्रदाय और धर्म संस्थान चला रहा है फिर भी वह पंगु है। वह अपने आप से मात खा जाता है।

इसलिए प्रभु महावीर ने मनुष्य के हाथ में ऐसा पराक्रम थमाया है जिससे मुक्ति का बोध हो और आत्मशक्ति मिले।

युगपुरुष प्रभु महावीर तप प्रधान संस्कृति के उज्ज्वल प्रतीक है। उन्होंने ऐसी राह बताई है जिससे मनुष्य का मन संयम और आत्मबोध के सान्निध्य में रहकर जीवन को निर्लिप्त रख सकता है।

प्रभु महावीर का जीवन दर्शन एक अनुभव है और एक संस्कृति की स्मृति है। इतिहास ने उनके दर्शन को हृदयंगम कर अपना रास्ता तय किया है। इसलिए महावीर को समझना और सहेजना अपने संपूर्ण जीवन को समझना और सहेजना है।

प्रस्तुत कृति में भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर केन्द्रित बारह प्रवचन हैं। इसके द्वारा हमने भगवान महावीर के दृष्टिकोण की सूक्ष्मता में

जाकर उनकी सहनशक्ति और समझशक्ति को उभारने का तनिक प्रयास किया है।

परमात्मा महावीर का बचपन जितना ओजस्वी था उतना ही उनका यौवन आग में तपे कुंदन सा तपस्वी था। इसी ओजस्विता और तपस्विता के योग से निःसृत उनकी वैराग्य की लौ इतनी प्रदीप्त थी कि भोग व ऐश्वर्य के समीर का प्रखर झोंका भी उसे बुझा नहीं सका। वैभव उनके कदमों को रोक न सका बल्कि स्वयं रुक गया। चूँकि वैभव व्यक्ति को विभक्त करता है और आत्मान्वेषी वैभव का विसर्जन करता है।

आत्मखोजी महावीर ने साधना में जो कदम बढ़ाये वे बढ़ते ही गए। वे न रुके न ड़गमगाये। उनकी समता, धर्म जागरिता, सहिष्णुता और ध्यान की अप्रकम्पता अनुत्तर थी।

आज का मानव यह भूल गया है, विवेक के बिना बुद्धि, योग के बिना भोग, निवृत्ति के बिना प्रवृत्ति, त्याग के बिना संग्रह, आचार के बिना विचार, करनी के बिना कथनी, साधना के बिना शब्द और आंतरिक प्रकाश के बिना बाह्य विकास का कोई अर्थ नहीं है।

जरा सोचो! प्रभु महावीर बाहर से भीतर गए और हम बाहर ही बाहर तैर रहे हैं। आज हमारे पास सब कुछ है, भक्ति है, साधना है, व्रत-उपवास है, श्रवण है, दया है, त्याग है पर सब बाहर है, भीतर कुछ गया ही नहीं।

ऐसी स्थिति में प्रस्तुत संशोधित एवं संवर्धित प्रवचनात्मक कृति 'श्री महावीर कथा' पढ़कर महावीर से प्राप्त सिद्धान्तों की विरासत का स्पर्श कर सकें तो अवश्य हम भी महावीरमय बन सकेंगे।

साध्वी युगल निधि-कृपा
गुलमोहर एन्क्लेव, दिल्ली

प्रतियोगिता का बिगुल

इक्कीसवीं सदी के 2020 की ईरा में,
मैत्री चैरिटेबल की है बुलंद आवाज।
जिन्होंने घर-घर में जगाई ज्ञान की प्यास,
ऐसे साध्वी युगल पर है जिनशासन को नाज़।।

जिनवाणी के आधार पर बहाया श्रुतज्ञान का प्रवाह,
लोगों के मन में जगाई सचमुच पढ़ने की चाह।
होम डिलेवरी सिस्टम को मिली भारत देश में राह,
त्रिकरण त्रियोग से दुष्कर्मों को कर लो स्वाह।।

सन् 2003 से प्रतियोगिता का बजा ऐसा बिगुल,
अखिल भारतीय स्तर पर ज्ञान में हो सब मशगुल।
साध्वी युगल से चली प्रतियोगिता की परिपाटी,
जैन इतिहास में फिर थमाई स्वाध्याय की थाती।।

दिलाया **'जैन तत्व प्रकाश'** से तत्वों का ज्ञान,
'कर्म संहिता' ने कराई कर्मों की पहचान।
दो बार कर्मसिद्धान्त का किया मनयोग से पान,
'कर्म जिज्ञासा' से हुआ जन-जन का आत्मोथान।।

सन् 2009 में प्रतियोगिता की हुई ऐसी अगवानी,
'धन्य आराधना' व **'मृत्यु पाथेय'** ने दी चेतावनी।
सन् 2010 में **'लर्न और टर्न'** से हुई बागवानी,
'आत्मा के स्टेशन' से बच्चों ने पढ़ी जिनवाणी।।

अब '**श्री महावीर कथा**' का अभिनव उपहार,
ले '**DVD**' और '**पुस्तक**' का युगल आधार।
ज्ञान प्रतियोगिता का फिर स्वागत है आज,
जाने प्रभु महावीर की साधना का गहरा राज।।

आगे '**आगम संहिता**' की श्रृंखला हर बार,
लाएगी आपके जीवन में स्वाध्याय की बहार।
स्मरण रखो, ये अनमोल जीवन है दिन चार,
आत्मा बने परमात्मा यही श्रुत ज्ञान का सार।।

मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन
दिल्ली

एक मीठी सलाह

'श्री महावीर कथा' पुस्तक के पन्ने पलटने और पढ़ने के दौरान आपके भीतर उठी भाव तरंगों को एवं सोच संकल्पों की लहरों को जीवन के तट पर उतारने के लिए **'श्री महावीर कथा' DVD** को देखना एवं सुनना ऐसा है जैसे नॉवेल को पढ़ने के बाद उस पर बनी फिल्म को देखना। इसलिए **पुस्तक पढ़ने के पश्चात् DVD के माध्यम से प्रवचनों को सुनने का आनन्द लेना न भूलें।**

जीवन के पल पल को
आत्मस्थ करनेवाले
भगवान श्री महावीर ने
क्या किया और क्या दिया,
क्या था उनका विचार पक्ष,
कैसा था उनका आचार पक्ष।
जिनका संस्पर्श पाकर कष्ट चूर चूर हो गए।
किन्तु उन कष्टों के स्पर्श से वे चूर नहीं हुए
ऐसे संकल्प के सुमेरू तीर्थंकर प्रभु महावीर
जिनकी जीवन संगाथा पढ़कर
यदि हमें अपनी व्यथा-कथा कष्टप्रद नहीं लगे
तो निश्चित रूप से मान लेना
प्रभु महावीर का जन्म हमारे हृदय में हुआ है।

नन्दिता-सुशील जैन
दिल्ली

Website: http:/www.sadhuviyugal.com
E-mail: info@sadhviyugal.com

ISBN 978-93-80727-05-9

₹ 125